नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत - अफगानिस्तान संबंध नए मोड़ पर

भारत और अफगानिस्तान के ऐतिहासिक संबंध सदैव गहरे और बहुआयामी रहे हैं. दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और रणनीतिक बंधन सदियों से विकसित होते आए हैं. अफगानिस्तान का भौगोलिक और ऐतिहासिक महत्व भारत के लिए केवल पड़ोसी ही नहीं, बल्कि क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षा का अहम केंद्र भी रहा है. ऐसे में काबुल में भारतीय दूतावास की बहाली का निर्णय न केवल द्विपक्षीय सम्बन्धों की मजबूती का प्रतीक है, बल्कि दक्षिण एशिया की बदलती राजनीति और सुरक्षा समीकरणों में भारत की सक्रिय भूमिका को भी दर्शाता है.

अफगानिस्तान में तालिबान के अगस्त 2021 में सत्ता में आने के बाद भारत ने तत्काल प्रभाव से अपने दूतावास को बंद कर दिया था. यह कदम तब पूरे क्षेत्रीय परिदृश्य की अनिश्चितता और तालिबान शासन की अंतरराष्ट्रीय मान्यता के अभाव की प्रतिक्रिया के रूप में लिया गया था. हालांकि, भारत ने अफगानिस्तान के प्रति अपने समर्थन और प्रभाव को बनाए रखने के लिए जून 2022 में काबुल में एक 'तकनीकी मिशन' भेजा, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत ने तालिबान शासन को औपचारिक रूप से मान्यता न देते हुए भी वहां अपनी उपस्थिति बनाए रखने का संकल्प रखा है. अब, उस 'तकनीकी मिशन' को तत्काल प्रभाव से पूर्ण दूतावास का दर्जा देना एक महत्वपूर्ण राजनीतिक और कूटनीतिक संकेत है. यह कदम कई मायनों में विश्लेषण और समझ की मांग करता है. सबसे पहले, यह भारत की यह नीति दर्शाता है कि अफगानिस्तान में सत्ता में जो भी शासन हो, भारत दोहराए जाने वाले संकटों और द्विपक्षीय साझेदारी की संभावनाओं के बीच संवाद और सहयोग की राह पकड़ना चाहता है. इसके अंतर्गत अफगानिस्तान के विकास प्रोजेक्ट्स, मानवीय सहायता और क्षमता निर्माण में भारत की भूमिका को बढ़ावा देने का लक्ष्य है.

दूसरी ओर, भारत ने स्पष्ट कर दिया है कि वह तालिबान शासन को अभी भी औपचारिक मान्यता नहीं दे रहा है, क्योंकि दूतावास का नेतृत्व चार्ज डी'अफेयर्स स्तर का होगा, न कि राजदूत. यह नीति भारत की परंपरागत 'सशर्त मान्यता' की पृष्ठभूमि को दर्शाती है, जिसमें वह अपनी सुरक्षा चिंताओं, मानवाधिकार और क्षेत्रीय स्थिरता की स्थितियों के आधार पर तालिबान के साथ अपने संबंधों को आगे बढ़ाएगा. भारत-अफगानिस्तान के ऐतिहासिक संबंध गहराई, समझ और सहयोग की मिसाल हैं. प्राचीन काल से सिल्क रोड के जरिए द्विपक्षीय व्यापार हुआ, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान ने दोनों देशों के लोगों को जोड़ा. आधुनिक दौर में भारत ने अफगानिस्तान के पुनर्निर्माण में अरबों डॉलर निवेश किए, जिसमें सड़क, ऊर्जा, शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र प्रमुख थे. यह सहयोग अफगानिस्तान के स्थिर और समृद्ध होने की दिशा में भारत की प्रतिबद्धता का आईना है. काबुल में दूतावास की बहाली न केवल कूटनीतिक उपस्थिति का विस्तार है, बल्कि यह क्षेत्रीय रणनीति में भारत की सक्रियता को भी दर्शाता है. अफगानिस्तान के माध्यम से भारत अपनी सुरक्षा हितों की रक्षा, आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई, और पड़ोसी देशों के साथ बेहतर तालमेल बनाने का प्रयास करता रहा है.

यह कदम भारत के लिए तालिबान शासन के साथ संवाद स्थापित करने और अफगानिस्तान के स्थाई शांति प्रयासों में योगदान देने की जटिल लेकिन आवश्यक पहल है. कुल मिलाकर काबुल में भारतीय दूतावास की बहाली भारत-अफगानिस्तान के मजबूत ऐतिहासिक, सामाजिक और रणनीतिक रिश्तों का पुनरूद्धार है. यह दक्षिण एशिया में शांति, समृद्धि और विकास की दिशा में एक सकारात्मक प्रयास है, जो न केवल भारत के विदेश नीति के एजेंडे में महत्व रखता है बल्कि पूरे क्षेत्रीय समीकरणों को भी प्रभावित करेगा.

प्रकृति संरक्षण का महापर्व दीपावली

डां नीरज कुमार पाण्डेय

ज्ञान-प्रकाश के अनावरण का नाम ही दीपावली है जिसमें संसार में जड़ और चैतन्य के मिथ्या भेद को जानकर साधक को अपने अंदर ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करना है. इसके पश्चात ही वह परम तत्व का साक्षात्कार कर आंतरिक और बाह्य ग्रंथियों को सुलझा सकता है. अखंड सुख शांति और आनंद को प्राप्त करना ही दीपावली का प्रकाश है इसीलिए इसे अमावस्या की घोर अंधकारमय रात्रि में मनाया जाता है.

दीपावली सनातन संस्कृति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण त्योहार है. पूरा कार्तिक माह घरों तथा व्यापारिक संस्थानों की स्वच्छता व सजावट में लग जाता है. दीपावली के इस दृष्ट बाह्य और लौकिक रूप में कौन-सा आंतरिक तत्व छिपा है, जिसे जानने के पश्चात दीपावली हमें हमारे मूल वैदिक परंपराओं की नींव से जोड़ देती है.

श्रीरामचरितमानस में भक्ति के सोपानों का वर्णन अरण्यकांड में है, जिसका विश्लेषण भगवान श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण की जिज्ञासा-समाधान में करते हैं. उसी तरह ज्ञान प्राप्ति के सोपानों का वर्णन मानस के अंतिम उत्तरकांड में काकभुशुंडि जी गरुड़ जी के समक्ष करते हैं.

> **पौने 2 अरब साल से मनाई जा रही दीपावली**
>
> सृष्टि की शुरुआत अर्थात् लगभग पौने 2 अरब साल से, कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की अमावस्या को एक उत्सव के सदृश मनाया जाता रहा है। त्रेता युग मे अर्थात् आज से लगभग 9 लाख वर्ष पूर्व श्रीराम भी इस दिन उत्सव मनाते थे। अत :स्पष्ट है कि इस दिन का श्रीराम से पहले भी किसी उत्सव से सम्बंध था। इस दिन को पहले शारदीय नवसश्येष्टि के रूप मे मनाया जाता था। इस दिन खरीफ ऋतु की फसले जैसे गन्ना, धान,दाले आदि पक जाते है अत : इस खुशी मे शारदीय नव सश्येष्टि पर्व मनाया जाता था.

वस्तुतः ज्ञान-प्रकाश के अनावरण का नाम ही दीपावली है, जिसमें संसार में जड़ और चैतन्य के मिथ्या भेद को जानकर साधक को अपने अंदर ज्ञान का दीपक प्रज्वलित करना है. इसके पश्चात ही वह परम तत्व का साक्षात्कार कर अपनी आंतरिक और बाह्य ग्रंथियों को सुलझा सकता है. अखंड सुख, शांति और आनंद को प्राप्त करना ही दीपावली का प्रकाश है, इसीलिए इसे अमावस्या की घोर अंधकारमय रात्रि में मनाया जाता है.

अयोध्या में जब भगवान पधारे तो जड़, चेतन, स्वजन, परिजन, प्रकृति, सरयू, पशु, पक्षी सब उस आनंदमय कोष में स्थित हो गए. एक दीपक नहीं, एक मणि नहीं, पर अनगिनत लोगों के हृदय में आनंद के दीपक जल गये, भक्ति मणियों के प्रकाश से द्वैत मिट गया :

बहु तक चढ़ी अटारिन्ह निरखहिं गगन बिमान।
देखि मधुर सुर हरषित करहिं सुमंगल गान।।

अटारियों पर चढ़ने का तात्पर्य है अपने से ऊपर उठ जाना, ताकि राम का विमान दिखाई दे जाए. राम ही वह आनंदमय कोष हैं, जिनके लिए श्रीरामचरितमानस में शंकर जी कहते हैं, जो परमानंद स्वरूप श्रीराम हैं, वे ही मेरे प्रभु हैं :

*राम ब्रह्म व्यापक जग जाना।
परमानंद परेस पुराना।।...*
पुरुष प्रसिद्ध प्रकाश निधि प्रगट परावर नाथ।
रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहँ सिव नायउ माथ।।**

राम की प्राप्ति के बिना किसी भी स्थिति में आनंद संभव ही नहीं है. राम के बिना दीपक में तेल और बाती जल सकती है, पर आनंद में प्रवेश संभव नहीं है. अयोध्या के इस आनंद के बाद की रामायण को गोस्वामी जी ने लिखा ही नहीं, क्योंकि यह आनंद प्राकृत नहीं है. यह आनंदमय कोष है. परमानंद, अखंडानंद, आत्मानंद, विशुद्धानंद, चिन्मयानंद का प्राप्ति के पश्चात अभाव नहीं होता है. वह तो सदा एकरस रहता है.

तब नगाड़े बजा कर होते थे.

वामन अवतार में भगवान ने राजा बलि से तीन पग स्थान दान में माँगा था . जब भगवान ने दो पग में धरती और आकाश को नाप लिया तो तीसरे पग के लिए राजा बलि अपना शीश झुका दिया. इससे प्रसन्न होकर भगवान ने बलि को पाताल कर्ज बना दिया और आश्वासन दिया इस दिन पृथ्वीवासी प्रत्येक वर्ष दीपावली का उत्सव मनायेंगे.

त्रेता युग में राम के 14 वर्षों के वनवास और लंका विजय के पश्चात उनके सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या आगमन पर नगरवासियों ने प्रसन्न होकर उनका स्वागत दीये जलाकर किया था.

द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध कार्तिक मास की चतुर्दशी को किया था . अगले दिन गोकुलवासियों ने दीप जलाकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी.

समुद्र मन्थन के परिणामस्वरूप उससे निकले चौदह रत्नों में लक्ष्मी जी भी थीं. कहा जाता है कि उनका प्राकट्य कार्तिक मास की अमावस्या तिथि को ही हुआ था.

500 ई. पू. की मोहन जो दड़ो की सभ्यता में प्राप्त मिट्टी की मूर्ति से ज्ञात होता है कि वहाँ के निवासी दीपावली का पर्व मनाते थे . इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं कि देवी के दोनों ओर दीप जलाए जाए थे.

सम्राट विक्रमादित्य का राज्याभिषेक इसी दिन हुआ था . ई. पू. चौथी शताब्दी में कौटिल्य ने लिखा है कि इस समय दीपावली के पर्व पर लोग मन्दिरों और नदी के घाटों पर दीप जलाते थे .

विन्ध्य की डायरी

नाराज भाजपा नेताओं की आत्ममंथन बैठक ने बढ़ाई चिंता

रवि तिवारी

भाजपा के खाटी कार्यकर्ताओ की जिस तरह से उपेक्षा सिंगरौली में हुई है उसको लेकर असंतोष का घड़ा आखिरकार फूट गया. खुद को उपेक्षित मान रहे भाजपा नेताओं ने आत्म मंथन बैठक कर संगठन की नींद उड़ा दी है. पहली बार इतना बड़ा असंतोष यहां देखने को मिला. मनमुटाव और नाराजगी आपस में हमेशा रही, लेकिन इस कदर पहली बार देखने को मिली है. बैठक में प्रदेश उपाध्यक्ष कांतिदेव सिंह एवं जिलाध्यक्ष सुन्दरलाल शाह को लेकर विरोध जताया और नेताओं का दर्द छलका. दरअसल भाजपा जिलाध्यक्ष सिंगरौली के चयन के बाद से ही विरोध के स्वर शुरू हो गये थे.

कुछ दिनो तक मामला ठंडा पड़ा रहा, लेकिन जिला कार्यकारिणी घोषित होने के बाद विरोध के स्वर गूंजने लगे. यह नाराजगी सत्ता की नही बल्कि संगठन के खिलाफ है. कनिष्ठ और वरिष्ठ नेता लामबंद हो चुके है और अब नवम्बर के प्रथम सप्ताह में पूर्व पदाधिकारियों के साथ आत्म मंथन बैठक होगी. जिसमें आगामी रणनीति पर अंतिम मोहर लगाई जाएगी और नाराज दल प्रदेश अध्यक्ष से मिलकर अपना पक्ष रखेगा. नाराज नेताओं का साफ कहना है कि जिन्होने पार्टी को अपनी मेहनत पसीने से सीचा, दरी बिछाई, आज उन खाटी कार्यकर्ताओं को किनारे किया जा रहा है और जो बाहर के है उन्हे महत्व मिल रहा है.

लिहाजा वरिष्ठ नेता अपने को ठगा महसूस कर रहे है. कार्यकर्ताओं का सीधा आरोप है कि जिलाध्यक्ष चंद लोगो से घिरे हुए है और उन्ही के इशारे पर काम कर रहे है. आत्म मंथन बैठक में प्रदेश संगठन के साथ-साथ बड़े नेताओं की नींद उड़ा दी.

हस्ताक्षर अभियान की खानापूर्ति

रीवा में कांग्रेस संगठन बैसाखी के सहारे चल रहा है, तमाम निर्देश और संगठन को बूथ स्तर पर मजबूत करने की योजना केवल बैठक तक ही सीमित रह गई. वोट चोर गद्दी छोड हस्ताक्षर अभियान की खानापूर्ति रीवा में की गई. जबकि अन्य जिलो में पूरे उत्साह और लगन के साथ बूथ स्तर तक कर्यकर्ता पहुंचे और हस्ताक्षर एकत्र किये. लेकिन यहा कार्यकर्ताओं और जिम्मेदार पदाधिकारियों में कोई उत्साह-जोश देखने को नही मिला. केवल हस्ताक्षर अभियान की औपचारिक खानापूर्ति की गई.

जिस तरह से हस्ताक्षर अभियान को लेकर रणनीति बनाई गई थी उस तरह तो काम नही हुआ. एक जगह बैठ कर हस्ताक्षर ले लिये गये. बूथ स्तर पर आम आदमी को हस्ताक्षर अभियान में जोडने से संगठन असफल रहा, महज खानापूर्ति कर ली गई. जिस तरह से संगठन को मजबूती से काम करना चाहिये नहीं कर पा रहा. कांग्रेस नेताओं के गुटबाजी हिलोरे ले रही है.

मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश मंत्री की गुफ्तगू

प्रदेश के मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव और भाजपा के प्रदेश मंत्री राजेश पाण्डेय के बीच देवसर विश्राम गृह में हुई गुफ्तगू चर्चा का विषय बनी हुई है. करीब 35 मिनट तक बंद कमरे में गुफ्तगू चली, क्या बात हुई किसी को मालूम नही? लेकिन इस बैठक को रीवा जिले की सियासत से जोड़ कर देखा जा रहा है. जिस तरह से रीवा में नेताओं के बीच आपसी खींचतान चल रही है , दोनो की मुलाकात कड़ी को उसी से जोड़ा जा रहा है. विश्राम गृह के अंदर गुफ्तगू चल रही थी और बाहर भाजपा के कई वरिष्ठ नेता , विधायक भी मौजूद थे. किसी को अंदर जाने की इजाजत नही थी. केवल कलेक्टर कुछ सेकेंड के लिये बुलाए गये थे. फिर उन्हे भी जाने के लिये कह दिया गया. प्रदेश मंत्री को मुख्यमंत्री द्वारा जिस तरह से तरजीह दी गई उसको लेकर चर्चा का बाजार राजनीति गलियारे में गर्म है तो वहीं निकट भविष्य को लेकर इसे राजनीतिक नियुक्तियों से भी जोड़ा जा रहा है. मुख्यमंत्री सिहावल विधायक विश्वामित्र पाठक के यहां शोक संवेदना व्यक्त करने पहुंचे थे.

भारत की अफगान नीति : दुनिया को नया संदेश

अफगानी विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी की भारत यात्रा ने दुनिया का ध्यान खींचा है. मुत्तकी को मिले स्वागत और सम्मान ने कूटनीतिक विश्लेषकों को आश्चर्यचकित किया है. वहीं भारत की अफगान नीत बदलते विश्व को एक नया संदेश है. काबुल दशकों से बड़े देशों की शक्ति स्थापना की लालसा का केंद्र बिंदु रहा है. दोहा समझौते के बाद अमेरिकी सेनाओं की वापसी और पुनः तालिबान के सत्ता में आने पर जब पूरा विश्व असमंजस में था, तब भारत ने एक बार फिर अपने संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण से विश्व को चौंकाया. भारत ने यह स्पष्ट कर दिया कि किसी भी देश की विदेश नीति केवल रणनीतिक हितों तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें नैतिकता, संवाद और मानवता का गहरा स्थान भी है. मुत्तकी की भारत यात्रा ने इस नीति को नया आयाम दिया है. यह यात्रा महज औपचारिक शिष्टाचार का हिस्सा नहीं है, बल्कि दक्षिण एशिया में बदलते समीकरणों की दिशा तय करने वाली एक ऐतिहासिक घटना बन गई है. मुत्तकी को भारत आने की अनुमति संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की प्रतिबंध समिति से मिली, जो अपने-आप में यह संकेत था कि अंतरराष्ट्रीय समुदाय अब अफगानिस्तान के साथ संवाद की संभावनाओं को पूरी तरह खारिज नहीं कर रहा. दिल्ली में उनके आगमन पर भारत के विदेश मंत्रालय ने भी स्पष्ट किया कि यह बातचीत अफगानिस्तान की जनता के हित, क्षेत्रीय सुरक्षा और मानवीय सहायता पर केंद्रित है. यह सत्ता से नहीं, जनता से संवाद का वही दृष्टिकोण है जिसे भारत ने 2021 में तालिबान के सत्ता में आने के बाद अपनाया था! भारत ने बीते दो दशकों में अफगानिस्तान में जिस स्तर का विकास कार्य किया, वह किसी भी सैन्य हस्तक्षेप से अधिक प्रभावी रहा. सलमा डैम, अफगान संसद भवन, जरांज-डेलाराम राजमार्ग जैसी परियोजनाओं ने न केवल अफगान जनता के जीवन स्तर को बदला, बल्कि भारत को वहां के लोगों के बीच गहरी स्वीकार्यता भी दिलाई.

अफगान विदेश मंत्री अमीर खान मुत्तकी की यह यात्रा केवल एक कूटनीतिक घटना नहीं, बल्कि एक ऐसे भारत की प्रतीक है जो अपनी शांत शक्ति से विश्व राजनीति में सम्मान अर्जित कर रहा है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

टिकट नहीं मिला तो आया रोना कुर्ता फाड़कर दिखाया सीना

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, चुनाव की बेला में नेता के प्राण टिकट में अटके होते हैं. वह पार्टी से टिकट पाने की उसी तरह प्रतीक्षा करता है जैसे चातक पक्षी स्वाति नक्षत्र में पड़नेवाली वर्षा की बूंद की बाट जोहता है. बिहार में ऐसी ही दिलचस्प घटना हुई. वहां राजद नेता मदन शाह ने विधानसभा चुनाव के लिए टिकट नहीं मिलने पर पार्टी प्रमुख लालू प्रसाद यादव के आवास के बाहर अपना कुर्ता फाड़ डाला. इतना ही नहीं, वह किसी जिद्दी बच्चे के समान जमीन पर लेटकर जोर-जोर से रोने लगे. वहां मौजूद लोगों ने इस पूरे घटनाक्रम को अपने मोबाइल में रिकार्ड कर लिया जो कि सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है.

हमने कहा, नेता को ऐसी नौटंकी करने या व्यर्थ का सीन क्रिएट करने की बजाय संयम रखना था. वक्त से पहले और किस्मत से ज्यादा चुनावी टिकट किसी को भी नहीं मिलता. ऐसी लालसा क्यों रखना जिसके पूरी न होने पर इतना दुख हो!

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, चुनाव में टिकटों का सौदा होता है. मदन शाह ने आरोप लगाया कि राजद ने उनसे टिकट के बदले पैसे मांगे थे. जब उन्होंने रकम देने से इनकार किया तो पार्टी ने उनका टिकट काटकर डा. संतोष कुशवाहा को दे दिया. मदन ने कहा कि मैं वर्षों से पार्टी के लिए काम कर रहा हूं लेकिन मुझे क्या मिला!

हमने कहा, यह बात हर कार्यकर्ता को समझनी चाहिए कि कर्म करते रहो, फल की चिंता मत करो! दाने-दाने पे लिखा है खानेवाले का नाम, लेनेवाले अनेक, देनेवाला एक राम!

हमने कहा, चुनाव पैसे का खेल है. पार्टी का इंजन दौलत के ईंधन से चलता है. कार्यकर्ताओं को समझना चाहिए कि उनकी किस्मत में निस्वार्थ सेवा और नेता के भाग्य में पौष्टिक मेवा रहता है. हर दल में यही हाल है. नेता मलाई खाएगा तो थोड़ी सी खुरचन कार्यकर्ता के लिए भी छोड़ देगा. यदि नेता टिकटों की दलाली करते हैं तो भी निष्ठावान कार्यकर्ता को नमकहलाली करनी चाहिए. टिकट नहीं तो कम से कम सेवा का पुण्य तो उसे जरूर मिलेगा।

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12058 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3	■	4	5	6
7		■		■	8		
■	■	9				■	
10			■	■	11	12	
	■	13	14	■	15		■
■	16			17	■	18	
19		■	20		21		■
22				■	23		

ऊपर से नीचे
1. पुत्र वाला, पुत्र की कामना करने वाला 2. ध्वनि, गुंजार 3. रक्षा, बचने का भाव, त्राण, बचने हेतु किया गया प्रयत्न 4. पत्थर गढ़ने या काटने वाला कारीगर (उर्दू) 5. हाथी, आठ की संख्या 6. लोकप्रिय (उर्दू) 9. प्रलय (उर्दू) 10. हिरनी, हरिणी 12. तंत्र-मंत्र द्वारा किसी को वश में करना 14. तिरछा, टेढ़ा 16. वायुयान चालक, जो उड़ता हो 17. नारी, नाल, गर्दन 19. कत्था 21. छोटी खाट या बड़ी मचिया

बाएं से दाएं
1. चकवा नामक पक्षी, चकवाक (उर्दू) 4. मेल, मिलाप, वह स्थान जहां दो नदियां मिले 7. औरत 8. तिलपपड़ी 9. जिसमें किसी उग्र प्रभाव से स्वयं रक्षित रखने की शक्ति अथवा गुण हो (सं.) 10. शिकार, आखेट (सं.) 11. राजा, राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि 13. बुद्धि, समझ 15. चंद्रमा 16. ऊपर से नीचे आना, शरीर के जोड़ या नस का अपने स्थान से हटना 18. कार्य, काम 19. ठोस, दृढ़, कठिन 20. राजपूतों की जाति की एक प्रधान शाखा 22. शिथिलता, थकान 23. कौटिल्य

Solution 12057

प	र	मा	नं	द	■	का	श
र	स	द	■	व	री	य	ता
ख	■	क	■	न	■	दा	नी
■	पा	■	मि	■	वा	■	क
अ	र्थ	शा	स्त्र	■	द	■	■
व	■	र	■	अ	वि	ना	शी
ता	ज	दा	र	■	वा	न	र
र	ई	■	■	खं	द	क	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में चिन्ताओं से छुटकारा मिलेगा, राज्य सम्मान की प्राप्ति होगी, गृहकार्य में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, मन में प्रसन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में यात्रा का योग है, व्यय में कमी तथा व्यापार में सुधार होगा, रोजगार में सफलता मिलेगी, भाईयों के सहयोग से राजनैतिक लाभ होगा, वर्ष के अन्त में व्यवहारकुशलता बढेगी, मित्र के कारण कार्यो में व्यवधान आयेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को भाईयों से राजनैतिक लाभ होगा, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, धन लाभ का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यय में कमी तथा व्यापार में उहापोह की स्थिति निर्मित होगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक हंसमुख, मिलनसार, चंचल तथा व्यवहारकुशल होगा, जन्म स्थान से दूर रहकर अपना भाग्योदय करेगा, माता पिता का भक्त होगा, दूर दराज की यात्रा अधिक पसंद करेगा, तेजस्वी और निडर होगा. सर्विस करना पसंद करेगा.

मेष- विशेष श्रम एवं प्रयास से कार्य में सामान्य सफलता मिलेगी, विवादों को न बढ़ायें, प्रतिष्ठा मिलेगी, अनावश्यक व्ययभार बढ़ सकता है.

वृषभ- नई जिम्मेदारी आने से चिंतित हो सकते हैं, नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा, शोध कार्य में शुभ समाचार मिलेगा, सुखशांति बनी रहेगी.

मिथुन- उच्च अध्ययन में अच्छी सफलता के योग हैं, व्यापारिक साझेदारी लाभकारी रहेगी, नौकरी संबंधी प्रयासों में सफलता, राजकीय सहयोग बनेगा.

कर्क- कार्यस्थल पर विवाद की संभावना, सत्संग से मानसिक प्रसन्नता एवं शांति रहेगी, अचानकसुखद एवं लाभदायक सूचना मिलेगी, प्रवास का योग प्रबल है.

सिंह- कानूनी मामले सुलझेंगे, बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी, नवीन योजना बनेगी. अचानक धन लाभ हो सकता है, शारीरिक शिथिलता दूर होगी.

कन्या- समय के साथ तौर तरीके में बदलाव कर लें, मेलजोल बढ़ेगा, व्यवसायिक कामकाज की अधिकता रह सकती है, मनोरंजन के साधन बनेंगे.

तुला- परिचितों को जानबूझकर नाराज न करें, आर्थिक लेनदेन में सावधानी रखें, कार्य की अधिकता से मानसिक पीड़ा होगी, शत्रु वर्ग पराजित होगा.

वृश्चिक- ले देकर कार्य कराने की योजना सफल रहेगी, संतान के कारण भावनात्मक कष्ट होगा, नवीन योजनाओं का विकास होगा, मनोरंजक यात्रा हो सकती है.

धनु- लोग दबाव बनाने की कोशिश करेंगे, भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होगी, महिला जाति की सलाह लेना उपयोगी सिद्ध होगा.

मकर- नया घर खरीदने का मन बनेगा, साहसिक प्रयत्न से अभीष्ट कार्यो की प्राप्ति होगी, बने बनाये कार्यो में व्यवधान आ सकता है, नवीन कार्यो की रूपरेखा बनेगी.

कुम्भ- युवाओं को बेहतर सफलता मिलेगी, आकस्मिक खर्च होगा, कामकाज पूरा होगा, प्रतिष्ठा मिलेगी, नये कार्य बनने का योग है.

मीन- समय पर सोचे कार्य बनने का योग है, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, मेलजोल बढ़ेगा, मनोरंजन आदि में व्यय होगा, मानसिक संतोष बना रहेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

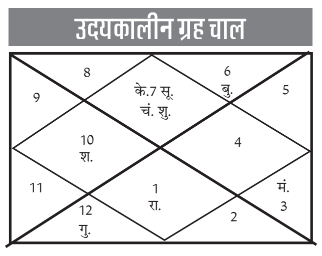

पंचांग

रा.मि. 01 संवत् 2082 कार्तिक शुक्ल द्वितीया गुरूवासरे रात 8/23, विशाखा नक्षत्रे रात 3/43, आयुष्मान योगे रातअंत 4/54, बालव करणे सू.उ. 6/22, सू.अ. 5/38, चन्द्रचार तुला रात 9/4 से वृश्चिक, पर्व-चन्द्रदर्शन, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक-9,2,6.

व्यापार भविष्य

कार्तिक शुक्ल द्वितीया को विशाखा नक्षत्र के प्रभाव से रूई, कपास, सूत, वस्त्र, सन् मैथी के भाव में सामान्य घट-बढ़ रहेगी, मोठ, मसूर बाजरा, मक्का, मूँगफली, गुड़ तेल, घी, के भाव में तेजी रहेगी, भाग्यांक 2563 है.

SUDOKU 7190

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7189

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7